ISSN: 0976-2876 (Print)
SPECIAL EDITION
ISSN: 2250-0138 (Online)

भारतीय संदर्भ में मूल्यनिष्ठ शिक्षा का उद्देश्य और प्रभाव

रेखा जांसल[1]

शासकीय संजय गांधी स्मृति महाविद्यालय, गंजबासौदा, म.प्र., भारत

शोध–सार

भारतीय शिक्षा परंपरा सदैव ज्ञान, आचरण और नैतिकता के संतुलन पर आधारित रही है। आधुनिक युग में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न रहकर मानवता, सहिष्णुता, सहयोग और नैतिक मूल्यों के प्रसार का भी साधन बन गई है। यह शोध–पत्र भारतीय संदर्भ में मूल्यनिष्ठ शिक्षा के उद्देश्यों, उसकी आवश्यकता, प्रभाव तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उसके समावेश का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि मूल्यनिष्ठ शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास का आधार है, बल्कि सामाजिक एकता और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

मूल शब्दः नैतिक, सकारात्मक, सहानुभूति, आत्म–जागरूकता, आत्म–सम्मान, आत्म–मूल्य

प्रस्तावना

भारत का शैक्षिक दर्शन "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे मानवीय आदर्शों पर आधारित है। प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था से लेकर आधुनिक शिक्षा प्रणाली तक, भारतीय शिक्षण परंपरा का प्रमुख उद्देश्य सदैव व्यक्ति में नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास रहा है।आज की प्रतिस्पर्धात्मक एवं भौतिकतावादी दुनिया में शिक्षा का स्वरूप व्यावसायिक बन गया है, जिससे नैतिक मूल्यों का क्षरण देखा जा रहा है। ऐसे समय में मूल्यनिष्ठ शिक्षा समाज को पुनः मानवता, सत्य, करुणा, सेवा और सह–अस्तित्व की दिशा में अग्रसर करने का माध्यम बन सकती है।

शिक्षा केवल कार्यक्षमता को बढ़ाने मात्र का साधन नहीं है। यह जनसाधारण की सहभागिता को व्यापक बनाने तथा व्यक्ति एवं समाज की समग्र गुणवत्ता के उन्नयन का एक प्रभावी उपकरण भी है। जनाधिक्य के कारण सरकार क्षेत्रीय, सामाजिक तथा लैंगिक असमानताओं को दूर करने हेतु शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के संगठित प्रयास करने के लिए वचनबद्ध है, क्योंकि तेजी से बदलते घरेलू एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य को देखते हुए केवल मात्रात्मक विस्तार से वांछित परिणाम नहीं प्राप्त होंगे।मूल्य शिक्षा एक शैक्षिक दृष्टिकोण है जो छात्रों को उन मूल्यों को सिखाने पर केंद्रित है जो उनके व्यक्तिगत सामाजिक और नैतिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। मूल्य शिक्षा में ईमानदारी सम्मान जिम्मेदारी करुणा और दया जैसे मूल्यों पर अत्यधिक जोर दिया जाता है। मूल्य शिक्षा का लक्ष्य एक सकारात्मक और सामंजस्यपूर्ण समाज को बढ़ावा देना है जहां व्यक्ति एक–दूसरे का सम्मान और देखभाल करें।मूल्य शिक्षा छात्रों को नैतिक और नैतिक व्यक्ति बनने में मदद करती है जो समाज में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। यह न केवल उन्हें मूल्यों के बारे में सिखाता है बल्कि उन्हें आलोचनात्मक सोच कौशल सहानुभूति और अपने और दूसरों के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में भी मदद करता है।

उद्देश्य

- भारतीय शिक्षा परंपरा में मूल्यनिष्ठ शिक्षा की अवधारणा का अध्ययन करना।
- मूल्यनिष्ठ शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों का विश्लेषण करना।
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्यनिष्ठ शिक्षा की आवश्यकता को समझना।
- समाज और विद्यार्थियों पर मूल्यनिष्ठ शिक्षा के प्रभावों का मूल्यांकन करना।
- मूल्यनिष्ठ शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

मूल्य आधारित शिक्षा के शिक्षा के उद्देश्य

- भारतीय संस्कृति और शिक्षा दर्शन में सदैव इस बात पर बल दिया गया है कि शिक्षा केवल ज्ञान या कौशल प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम है। मूल्यनिष्ठ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के भीतर नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और मानवीय गुणों का विकास करना

[1]Corresponding author

है ताकि वह अपने जीवन और समाज दोनों के प्रति उत्तरदायी बन सके।

- नैतिक और चारित्रिक विकास– मूल्यनिष्ठ शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, अनुशासन, करुणा और सहिष्णुता जैसे नैतिक गुणों का विकास करना है। जब व्यक्ति में सही और गलत की पहचान विकसित होती है, तब वह समाज में सकारात्मक और जिम्मेदार भूमिका निभा सकता है।
- व्यक्तित्व और आंतरिक विकास– यह शिक्षा केवल बाहरी ज्ञान नहीं देती, बल्कि व्यक्ति के अंतरात्मा, चिंतन और संवेदना को भी जागृत करती है। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्म–सम्मान और आत्म–नियंत्रण की भावना विकसित होती है, जो जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक है।
- सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना– मूल्यनिष्ठ शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियों को समाज के प्रति जिम्मेदार बनाना है। इससे उनमें सेवा, सहयोग, समानता, और सामूहिक कल्याण की भावना विकसित होती है। ऐसी शिक्षा व्यक्ति को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।
- राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक संरक्षण– भारत विविधताओं से भरा देश है कृ भाषाओं, धर्मों, संस्कृ तियों और परंपराओं का संगम। मूल्यनिष्ठ शिक्षा विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक गौरव और पारस्परिक सम्मान की भावना जगाती है, जिससे समाज में सौहार्द और एकता बनी रहती है।
- सह–अस्तित्व और पर्यावरण चेतना– मूल्य शिक्षा मनुष्य को प्रकृति और जीव–जगत के प्रति संवेदनशील बनाती है। यह विद्यार्थियों को प्रकृति संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन और सतत विकास की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे पृथ्वी पर जीवन का संतुलन बना रहे।
- जीवन कौशल और निर्णय क्षमता का विकास– मूल्यनिष्ठ शिक्षा विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने हेतु तैयार करती है। यह उनमें संवाद, सहयोग, समस्या समाधान, सहानुभूति और विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विकसित करती है।
- आध्यात्मिक और मानवीय चेतना का विस्तार– भारतीय दर्शन में शिक्षा को आत्मज्ञान की प्रक्रिया कहा गया है। मूल्यनिष्ठ शिक्षा व्यक्ति को अपने आंतरिक अस्तित्व, मानवता, और ईश्वर के प्रति श्रद्धा की भावना से जोड़ती है, जिससे वह अधिक संवेदनशील और संतुलित जीवन जी सके।
- संक्षेप में कहा जाए तो मूल्यनिष्ठ शिक्षा का उद्देश्य ऐसे संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो ज्ञानवान, नैतिक, संवेदनशील, उत्तरदायी और आत्मसंतुष्ट हो। ऐसी शिक्षा से व्यक्ति न केवल स्वयं के जीवन को दिशा देता है, बल्कि एक सशक्त, नैतिक और समरस समाज की स्थापना में भी योगदान देता है।

मूल्य आधारित शिक्षा के शिक्षा के प्रभाव

- मूल्य आधारित शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति और समाज दोनों के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास का आधार है। इसके प्रभाव व्यक्ति के आचरण, जीवन–दृष्टि और समाज के समग्र वातावरण पर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।
- व्यक्तिगत स्तर पर प्रभाव– मूल्य आधारित शिक्षा का सबसे पहला प्रभाव व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व निर्माण पर पड़ता है। इससे विद्यार्थियों में ईमानदारी, आत्मसंयम, अनुशासन और करुणा जैसी मानवीय विशेषताएँ विकसित होती हैं। व्यक्ति के विचार, व्यवहार और निर्णय लेने की क्षमता में संतुलन आता है। वह जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाता है और आत्मविश्वास से कार्य करता है। यह शिक्षा व्यक्ति को केवल "सफल" नहीं बल्कि "सार्थक" जीवन जीने की प्रेरणा देती है।
- सामाजिक स्तर पर प्रभाव– मूल्यनिष्ठ शिक्षा समाज में सहयोग, समानता और सद्भाव की भावना को प्रोत्साहित करती है। इससे समाज में भेदभाव, हिंसा, स्वार्थ और असहिष्णुता जैसी समस्याएँ घटती हैं। लोग एक–दूसरे के प्रति सहानुभूति और सम्मान का भाव रखते हैं। सामुदायिक एकता, सामाजिक

सेवा और जनकल्याण के कार्यों में रुचि बढ़ती है।यह शिक्षा एक संवेदनशील और नैतिक समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- शैक्षणिक स्तर पर प्रभाव– मूल्य आधारित शिक्षा विद्यालय और शिक्षण संस्थानों के वातावरण को अधिक अनुशासित, सम्मानजनक और सकारात्मक बनाती है। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच आपसी विश्वास और संवाद में वृद्धि होती है। शिक्षण केवल परीक्षा–केंद्रित नहीं रहता, बल्कि जीवन–केंद्रित और अनुभवात्मक बन जाता है। विद्यालय समाज के लिए नैतिक दिशा देने वाला केंद्र बन सकता है।
- राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव– मूल्य आधारित शिक्षा राष्ट्रीय एकता और नागरिक उत्तरदायित्व को सशक्त बनाती है। यह नागरिकों में देशभक्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व और सेवा भावना का विकास करती है। ऐसे शिक्षित नागरिक लोकतंत्र के मूल्यों कृ समानता, न्याय और स्वतंत्रता कृ की रक्षा करते हैं। राष्ट्र में सद्भाव, ईमानदारी और नैतिक शासन व्यवस्था की नींव मजबूत होती है।
- सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रभाव– भारत की सांस्कृतिक विरासत मानवीय मूल्यों से समृद्ध है। मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृ ति, परंपरा और आध्यात्मिक विचारधारा से जोड़ती है। यह व्यक्ति में आत्मचेतना, ईश्वरभक्ति, और आंतरिक शांति की भावना को जागृत करती है। विद्यार्थी भारतीय आदर्शों जैसे अहिंसा, सत्य, सेवा और सह–अस्तित्व को अपने जीवन में अपनाने लगते हैं।
- वैश्विक दृष्टिकोण से प्रभाव– आज के वैश्वीकरण के युग में मूल्य आधारित शिक्षा विश्व नागरिकता की भावना को प्रोत्साहित करती है। इससे विद्यार्थियों में मानवता, शांति और पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ती है। यह वैश्विक समाज में सतत विकास और सह–अस्तित्व की संस्कृति को बढ़ावा देती है।
- संक्षेप में, मूल्य आधारित शिक्षा व्यक्ति को सुसंस्कृत, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनाती है।इसका प्रभाव न केवल व्यक्ति के आचरण और विचारों पर पड़ता है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र के नैतिक उत्थान में भी योगदान देती है।ऐसी शिक्षा एक ऐसे समाज की नींव रखती है जहाँ ज्ञान, आचरण और मानवता तीनों का संतुलन बना रहता है।

चुनौतियाँ

भारतीय शिक्षा प्रणाली में मूल्यनिष्ठ शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू करने में अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं। ये चुनौतियाँ न केवल संस्थागत स्तर पर, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक परिवेश से भी जुड़ी हैं।

शिक्षा का व्यवसायीकरण– आज शिक्षा ज्ञान और सेवा का माध्यम न रहकर एक व्यवसायिक क्षेत्र बन गई है। विद्यालय और विश्वविद्यालय प्रतियोगिता और लाभ पर अधिक ध्यान देते हैं, जिससे नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है।

पाठ्यक्रम में मूल्यों का सीमित समावेश– शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में मूल्य शिक्षा को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाया है। अधिकांश विषय परीक्षा–उन्मुख हैं, जबकि मूल्य–आधारित विषयों को गौण समझा जाता है।

शिक्षकों में प्रशिक्षण और संवेदनशीलता की कमी– मूल्य शिक्षा का प्रभाव तभी संभव है जब शिक्षक स्वयं नैतिक आदर्श हों। लेकिन कई शिक्षकों को मूल्य–आधारित शिक्षण के लिए प्रशिक्षण और व्यवहारिक दृष्टि नहीं मिलती, जिससे इसका वास्तविक प्रभाव घट जाता है।

परिवार और समाज की भूमिका में कमी– परिवार और समाज, जो मूल्य निर्माण के प्रथम आधार हैं, वे आज भौतिकवाद और व्यस्त जीवनशैली के कारण अपनी भूमिका निभाने में असफल हो रहे हैं। बच्चों को नैतिक आदर्शों के अनुभवात्मक उदाहरण नहीं मिल पाते।

तकनीकी और मीडिया प्रभाव– डिजिटल मीडिया और सोशल नेटवर्किंग ने युवाओं पर गहरा प्रभाव डाला है। नकारात्मक सामग्री और आधुनिक उपभोगवादी संस्कृति मूल्य–आधारित सोच को कमजोर करती है।

मूल्य शिक्षा के मूल्यांकन की कठिनाई – मूल्यों को अंकों या परीक्षाओं से मापा नहीं जा सकता। यह एक

निरंतर प्रक्रिया है, जिसे समझने और आकलन करने के लिए कोई निश्चित मानक नहीं है।

सुझाव

शिक्षा नीति में मूल्य शिक्षा का समावेश – राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के अनुरूप मूल्यनिष्ठ शिक्षा को प्रत्येक स्तर पर अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में मूल्य विषयों को मुख्य पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना आवश्यक है।

शिक्षक प्रशिक्षण और नैतिक सशक्तिकरण– शिक्षकों को विशेष रूप से मूल्य–आधारित शिक्षण, जीवन कौशल और चरित्र निर्माण के प्रशिक्षण दिए जाएँ। शिक्षक को केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि आदर्श व्यक्तित्व के रूप में तैयार किया जाए।

परिवार और समुदाय की सहभागिता– परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थान मिलकर संयुक्त प्रयास करें। विद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक, सेवा और नैतिक कार्यक्रमों में अभिभावकों और समुदाय की सक्रिय भागीदारी हो।

अनुभवात्मक और गतिविधि– आधारित शिक्षण रू नैतिक मूल्यों को केवल सैद्धांतिक रूप में नहीं, बल्कि व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से सिखाया जाए कृ जैसे सेवा कार्य, पर्यावरण अभियान, सहयोगी खेल, समूह चर्चा आदि।

मीडिया और तकनीक का सकारात्मक उपयोग – डिजिटल प्लेटफार्मों पर सकारात्मक, प्रेरणादायक और शैक्षिक सामग्री को बढ़ावा दिया जाए। विद्यार्थियों को तकनीक के नैतिक उपयोग के प्रति संवेदनशील बनाया जाए।

मूल्य आधारित मूल्यांकन प्रणाली – विद्यालयों में विद्यार्थियों के व्यवहार, सहयोग, अनुशासन और सेवा भावना के आधार पर भी मूल्यांकन किया जाए। इससे विद्यार्थियों में नैतिक गुणों का सम्मान बढ़ेगा।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में शिक्षा पद्धति और मूल्यों में कोई समन्वय दृष्टिगोचर नहीं होता है. यह सर्वविदित है आज व्यक्ति सुशिक्षित है. उच्च पद पर विद्यमान है, अपनी भौतिक सुख सुविधाओं में निर्लिप्त है किंतु स्वयं के अस्तित्व को ही नहीं समझ पा रहा। मूल्यों के अभाव में जीवन में आने वाली समस्याओं से भयभीत होकर व्यक्ति अवसाद के गर्त में जा रहा है। मूल्य विहीन मानव जीवन की कल्पना शून्य समान है। व्यक्ति के जीवन में मूल्यों की नींव शैशवावस्था से ही रखना प्रारंभ कर देना चाहिए । शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित ना होकर वास्तविक जीवन की गहराई को समझने वाली होनी चाहिए और यह तभी संभव है जब शिक्षा मूल्यपरक होगी। सफल जीवन हेतु व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए अर्थात् केवल भौतिक रूप से संपन्नता, सफल व्यक्ति का परिचय नहीं देती। मूल्यवान व्यक्ति ही सही मायनों में सफल जीवन का निर्वहन करते हैं एवं दूसरों के जीवनों में भी प्रेरणा का स्रोत बनते है और तभी समाज एवं राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है।निष्कर्षतः, मूल्य शिक्षा व्यक्तिगत और सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह व्यक्तियों को समाज का जिम्मेदार और नैतिक सदस्य बनने में मदद करने के लिए ईमानदारी, करुणा और सम्मान जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को पढ़ाने और बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

संदर्भ ग्रंथ

सक्सेना सरोज, (2000)ः शिक्षा के दार्शनिक एव समाज शास्त्रीय आधार, साहित्य प्रकाशन आगरा 6।

पेरी और सक्सेना, एन.आर स्वरूप (2005) शिक्षा के सिद्धांत आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

अनेजा एन. (2014), ष्वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा का महत्व और शिक्षक की भूमिका. सामाजिक विज्ञान और मानविकी अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 2, अंक 3,

शर्मा एस.एस. एवं शर्मा अन्जना (2011)ः ष्शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार,ष् एच, पी. भार्गव बुक हाऊस, कचहरी घाट आगरा।

शर्मा आर. (2018). भारतीय शिक्षा प्रणाली और मूल्य शिक्षा. नई दिल्लीरू अर्चना प्रकाशन।

सिंह डी. (2021). नैतिक शिक्षा का सामाजिक प्रभाव. वाराणसीरू भारतीय विद्या भवन।

कुमार एस. (2019). भारतीय संस्कृति और शिक्षा में मूल्यपरक दृष्टिकोण. लखनऊः ज्ञानदीप प्रकाशन।